हिटलर के उदय के कारण

हिटलर के उदय के कारणों में कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित थे —

1 वर्साय की संधि —

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद पेरिस शांति सम्मेलन में मित्रराष्ट्रों ने 28 जून 1919 को जर्मनी के साथ वर्साय की संधि की। संधि की शर्तें अत्यन्त कठोर थी। एक लेखक ने ठीक ही लिखा है " आर्थिक दृष्टि से पंगु, राजनीतिक दृष्टि से भग्न, सैनिक दृष्टि से पराजित, राष्ट्रीय दृष्टि से अपमानित और नैतिक दृष्टि से चूर्ण जर्मनी पेरिस शांति सम्मेलन से बाहर था।

अतः अपने प्राचीन गौरव की प्राप्ति के लिए एक ऐसे नेता की खोज करने लगे। हिटलर के व्यक्तित्व में उनको एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उनका प्रधान नेता या फ्यूरर बन सकता था।

2. जातीय परम्परा —

जर्मन जनता में सैनिक मनोवृत्ति स्वाभाविक रूप से विद्यमान थी। वह हमेशा अनुशासन तथा एक वीर नायक के अनुसरण करने के लिए तैयार रहती थी। जर्मन जनता ने हिटलर को भी एक राष्ट्रीय नायक के रूप में देखा और स्वीकार किया। दूसरे जर्मन जनता में प्रजातांत्रिक भावनाओं का पूर्ण विकास नहीं हुआ था। जर्मनी के सभी लोग उस समय सोचते थे कि यदि जर्मनी ने गणतंत्र के सिद्धान्त को अपना लिया तो उसे राष्ट्रपति विल्सन की सहानुभूति प्राप्त हो जाएगी। हिटलर ने जर्मन जनता के समक्ष कोई नया कार्यक्रम

या राजनीतिक दर्शन नहीं रखा। बल्कि वही कहा जो हेगल, कान्त फिक्टे, नीत्शे, फ्रेडरिक, मनविट्स, बिस्मार्क, कैसर इत्यादि कह चुके थे।

3- आर्थिक संकट

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् आर्थिक दृष्टि से जर्मनी सबसे अधिक तबाह हुआ था। मुद्रा का अवमूल्यन हो चुका था, उद्योग धंधे बंद हो गए थे। ऐसी ही प्रतिकूल परिस्थिति में हिटलर ने जर्मन जनता को अपने नाजीदल के आकर्षक कार्यक्रमों की ओर खींच लिया।

4. यहूदी विरोधी भावना

जर्मनी की जनता में यहूदी विरोधी भावना गहरे रूप में विद्यमान हो गई थी। हिटलर इससे फायदा उठाना चाहता था। जनता के समक्ष उसने यह प्रदर्शित किया कि आर्थिक संकटों के मूल में यहूदी ही हैं, अतः जितना जल्द हो सके उन्हें बाहर निकालना चाहिए।

5. साम्यवाद का विरोध -

हिटलर ने जर्मनी में फैलते हुए साम्यवादी विचारधारा का कड़ा विरोध किया। जनता के समक्ष उसने यह तर्क रखा कि साम्यवाद की अन्तर्राष्ट्रीयता का सिद्धान्त जर्मन राष्ट्रीयता के लिए सबसे

स्वतन्त्रता है। इन तत्वों का जर्मनी की जनता पर काफी प्रभाव पड़ता था और झूठी राष्ट्रीयता के नाम पर वह नाजीदल का समर्थन तैयार करने को तैयार रहती थी।

6. संसदीय परम्परा का अभाव –

प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत जर्मनी में वाइमर गणतंत्र की स्थापना हुई थी किंतु जर्मन-जनता का संसदीय शासन से घोर असंतोष था। जर्मन जनता को यह आशा थी कि जिस प्रकार इटली में फासिज्म की विजय हुई है वैसे ही जर्मनी में नात्सीवाद की विजय होगी। जर्मनी की जनता किसी ऐसे कर्मठ शक्ति की तलाश में थी जो जर्मनी की खोई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करा सके।

7. जर्मनियों की सैनिक प्रवृत्ति –

नाजी नेता हिटलर जर्मन के स्वभाव और सैनिक जीवन से अत्यधिक परिचित थे। अतः नाजियों ने अपनी सैनिक शक्ति वृद्धि के लिए जर्मनी के सैनिक प्रवृत्ति को उभारा और स्वयंसेवक सेना का दल तैयार किया।

8. जर्मन राष्ट्रीयता –

हिटलर ने जर्मन जातियों की श्रेष्ठता एवं सभ्यता को श्रेष्ठ बताया।

लेकिन जर्मन जनता वाइमर-शासन से संतुष्ट नहीं थी। वे एक दृढ़ शासक की आवश्यकता महसूस कर रहे थे जो देश में शांति और सम्पन्नता ला सके।

9. साहित्यिक नैराश्यवाद —

ओसवाल्ड स्पेंगलर ने अपनी पुस्तक 'पश्चिमी सभ्यता की अवनति' में पश्चिमी सभ्यता का दुखद चित्र प्रस्तुत किया। इगल फ्राइलेन, काउन्ट हरमान कैसर लिंग, मैरिया रेमार्क ने अपनी रचनाओं में युद्ध की विभीषिका का वर्णन किया है। इस नैराश्य वातावरण में हिटलर ने नवजीवन का संदेश दिया। उसकी आत्मकथा 'मेरा संघर्ष' (Mein Kampf) जर्मन के लिए बाइबल बन गई। अपनी पुस्तक में चार बातों पर जोर दिया —

(1) आत्म निर्णय के सिद्धान्त पर जर्मन राज्य में समस्त जर्मन भाषियों को सम्मिलित किया जाए।

2) बढ़ती हुई जनसंख्या को प्रवास क्षेत्र मिलना चाहिए।

3) जर्मनी का प्रादेशिक विस्तार पूर्व की ओर अथवा रूस तथा उसके समीपवर्ती राज्य

की ओर हो सकता है।

4/ फ्रांस जर्मनी का शत्रु है।

हिटलर ने एक अत्यंत ही अनुशासित स्वयं- सेवक सेना का भी संगठन कर लिया जिन्हें आक्रमण सैनिक एवं सुरक्षा पुलिस कहा जाता था। 1929 का आर्थिक संकट नाजीदल के विस्तार के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

सन् 1932 के निर्वाचन में हिटलर की पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ था, अतः उसे ही प्रधानमंत्री बनाया गया। अगस्त 1934 में उसे जर्मनी का चांसलर बनाया गया। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति का पद मिलाकर अब एक कर दिया गया। इस तरह शासन की समस्त शक्ति अब एक ही व्यक्ति - हिटलर के हाथों में आ गई।

00